P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-7* March- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

विवाहित तथा अविवाहित व्यक्तियों का आय तथा बचत के प्रति दृष्टिकोण

प्रतीक्षा तोमर
शोधार्थी
गृहविज्ञान विभाग,
जीवाजी विश्वविद्यालय,
ग्वालियर, (म.प्र.)

ज्योति प्रसाद
पूर्व प्राचार्या,
गृहविज्ञान विभाग,
शा.वी.आर.कॉलेज,
ग्वालियर, (म.प्र.)

सुनीता शर्मा
सहप्रधान अध्यापिका
गृहविज्ञान विभाग,
शा. के. आर.जी. कॉलेज,
ग्वालियर, (म.प्र.)

सारांश

विवाहित तथा अविवाहित व्यक्तियों का आय तथा बचत के प्रति दृष्टिकोण विभिन्न होता है जहाँ अविवाहित व्यक्ति आय के प्रति तो सतर्क होता है परन्तु बचत के प्रति उसकी धारणा धनात्मक नहीं होती जबकि विवाहित व्यक्ति आय के प्रति होता है सतर्क रहता है, परन्तु पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात् कुद राशि बचत के रूप में भी संग्रहीत करना चाहता है क्या वर्तमान युग इस दृष्टिकोण में परिवर्तित हुआ है यह जानने हेतु इस शोध पत्र की प्रस्तुति की जा रहे हैं। परिणाम भी इस ओर इंगित करते हैं कि विवाहित तथा अविवाहित व्यक्तियों का आय तथा बचत के प्रति दृष्टिकोण निम्न होता है।

मुख्य शब्द : बचत, घनात्मक

प्रस्तावना

विवाहित तथा अविवाहित व्यक्तियों के जीवन पर आय तथा बचत दोनों का ही प्रभाव पड़ता है। परन्तु यह प्रभाव विभिन्न होता है विवाहित व्यक्ति के पीछे एक पूरा परिवार होता है अतः वह पारिवारिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए बचत की योजना बनाता है तथा निश्चित आय की ओर आकर्षित रहता है जबकि अविवाहित व्यक्ति व्यक्तिगत निर्णयों से प्रभावित रहता है।

आय हमारे जीवन में इतनी प्रचलित हो गई है कि जब कभी भी आय शब्द का प्रयोग किया जाता है तो हमारा ध्यान मौद्रिक आय की ओर ही जाता है। वास्तव में तो आय से तात्पर्य उस समस्त लाभों और सेवाओं के प्रवाह से है जो एक परिवार को एक निश्चित समय में प्राप्त होती है।

प्रो. ग्रॉस व कैण्डल के अनुसार

पारिवारिक आय मुद्रा सेवाओं तथा संतोश की वह प्रवाह है जो परिवार के अधिकार में उनकी आवश्यकताओं तथा इच्छाओं को पूर्ण करने एवं उत्तरदायित्वों के निर्वाह हेतु आता है।

सामान्य अर्थ में कुल आय में से व्यय को घटा देने से जो कुछ शेष बचता हे, उसे बचत कहते हैं। सरल रूप में आय और उपभोग व्यय के अन्तर को बचत कहते हैं।

''वर्मा एवं देशपाण्डे के अनुसार''

बचत मनुष्य कर आय का वह भाग है, जो वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति में उपभोग नहीं किया जाता है वरन् भविष्य के उपयोग के लिए समझ–बूझकर अलग उत्पादक रूप में रखा जाता है और समिति को पूँजी की स्वरूप दिया जाता है।

प्रतिदर्ष का चुनाव

शोध अध्ययन में देव निर्दशन विधि को अपनाया गया है। इसके अंतर्गत वृहत्तर ग्वालियर क्षेत्र के विभिन्न बैंको से जानकारी एकत्रित कर तथा व्यक्ति विशेष से संपर्क कर साक्षात्कार सूची तथा सामाजिक आर्थिक स्तर मापानी का प्रयोग कर भरवाई गई।

उद्देश्य

विवाहित तथा अविवाहित व्यक्तियों के आय संबंधी दृष्टिकोण अध्ययन करना। विवाहित तथा अविवाहित व्यक्तियों को बचत संबंधी दृष्टिकोण अध्ययन करना।

परिकल्पना

वभिन्न विवाहित तथा अविवाहित व्यक्तियों के आय संबंधी दृष्टिकोण में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

विभिन्न विवाहित तथा अविवाहित व्यक्तियों के बचत संबंधी दृष्टिकोण में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

तालिका क्र. 1

आय के प्रति दृष्टिकोण का विवाह के अनुसार तुलनात्मक अध्ययन

विवाह	आय के प्रति दृष्टिकोण			सांख्यिकी मान्य	
	संख्या	माध्य	विचलन	t	P
विवाहित	242	16-74	2-28	3-187	P<0.05
अविवाहित	58	15-69	2-14		
योग	300	16-54	2-29		

तालिका क्र. 2

बचत के प्रति दृष्टिकोण का विवाह के अनुसार तुलनात्मक अध्ययन

विवाह	बचत के प्रति दृष्टिकोण			सांख्यिकी मान्य	
	संख्या	माध्य	विचलन	t	P
विवाहित	242	17-51	2-78	2-088	P<0.05
अविवाहित	58	18-33	2-25		
योग	300	17-67	2-71		

निष्कर्ष

चयनित व्यक्तियों का आय के प्रति दृष्टिकोण का माध्य 2-29 पाया गया जो कि विवाहित उत्तरदाताओं में माध्य 16.74 अधिक पाया गया अविवाहित उत्तरदाताओं की तुलना में 15.69

सांख्यिकी आय के प्रति दृष्टिकोण में विवाह के अनुसार सार्थक अंतर पाया जाता है। t-3-187, P<0.05½ उपकल्पना की आय के दृष्टिकोण के प्रति विवाहित उत्तरदाता और अविवाहित उत्तरदाता में अंतर नहीं पाया जाता, अस्वीकृत पाई जाती है। अतः विवाहित और अविवाहित उत्तरदाताओं में आय के प्रति दृष्टिकोण में अंतर पाया जाता है।

चयनित व्यक्तियों का बचत के प्रति दृष्टिकोण का माध्य 17-67 पाया गया जोकि विवाहित उत्तरदाताओं में माध्य 17-51 कम पाया गया। अविवाहित उत्तरदाताओं की तुलना में 18-33A

सांख्यिकी बचत के प्रति दृष्टिकोण में विवाह के अनुसार सार्थक अंतर पाया जाता है। t – 2.088, P<0.05 उपकल्पना की बचत के दृष्टिकोण के प्रति विवाहित उत्तरदाता और अविवाहित उत्तरदाता में अंतर नहीं पाया जाता, अस्वीकृत पाई जाती है।अतः विवाहित और अविवाहित उत्तरदाताओं में बचत के प्रति दृष्टिकोण में अंतर पाया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *एलहंसा देवकी नन्दन– सांख्यिकी के सिद्धान्त प्रथम संस्करण, किताब महल इलाहबाद 1958*
2. *कैथरी एस. सिंह – गृह व्यवस्था, आवास एवं गृह सज्जा विनोद पुस्तक मंदिर आगरा*
3. *देशपाण्डे आशा –परिवारिक वित प्रथम संस्करण*
4. *वर्मा कुसुम – गृह प्रबंध युनिवर्सल बुक डिपो ग्वालियर 1990*